यूहन्ना ने जगत का अन्त देखा

यीशु उन सबके स्वागत के लिए तैयार खड़े हैं, जो उन पर विश्वास लाते हैं

प्रार्थना : ''प्रिय प्रभु, बच्चों की सहायता करें कि वे स्वर्ग की आपकी प्रतिज्ञा को प्रिय जानें।''

किसी भी ऐसी गतिविधि का चुनाव करें जो बच्चों की आयु, और आत्मिक समझ के अनुसार उपयुक्त हो।

प्रकाशितवाक्य 20:11 - 21:4, 21:22 - 22:5 आदि स्थलों पर पाए जाने वाले स्वर्गिय दर्शनों के विषय जो यूहन्ना प्रेरित ने देखें, पढ़कर सुनाएं या मुखाग्र बताएं। इन स्थलों पर बताया गया है कि अन्त के दिनों में स्वर्ग व पृथ्वी पर क्या घटनाएं होंगी।

ये प्रश्न पूछें : (उत्तर साथ में दिए गए हैं)

- जो लोग मर गए हैं उनका क्या हुआ? *(देखें प्रका. 20:12)*
- उनका क्या होगा जिनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं होंगे। *(देखें 20:15)*
- नया येरूशलेम जो हमारा नया घर है, कैसा होगा? *(देखें 21:2)*
- कौन सी बातें स्वर्ग में नहीं होंगी? *(देखें 21:4)*
- वहां मंदिर, सूर्य व चन्द्रमा क्यों नहीं होगा? *(देखें 21:22-23)*
- नगर के बीचो-बीच कौन-सी चीज़ें हैं? *(देखें 22:1-2)*

पुनरावलोकन

- हम स्वर्ग में क्या वस्तुएं देखेंगे? *(परमेश्वर, श्वेत सिंहासन, पुस्तकें, यीशु प्रकाश, मृतक लोग, सुन्दर नगर, नदी, जीवन का वृक्ष)*
- हम स्वर्ग में क्या नहीं देखेंगे? *(मृत्यु, नरक, रोना, रात, सूर्य, चन्द्रमा, पाप, बीमारी)*

1. यूहन्ना के स्वर्गीय दर्शन के नाटक के अंश

- आराधना के संचालक के सहयोग से बच्चों द्वारा नाटक प्रस्तुत करने का प्रबंध कीजिए।
- पढ़ाने के समय में नाटक की तैयारी कराएं।
- नाटक के सभी अंश प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं।
- बड़े बच्चे छोटों की सहायता करें।
- बड़े और युवा बच्चे उद्घोषक तथा प्रचारक की भूमिका करें।
- छोटे बच्चे मित्रों की भूमिका करें।

उद्घोषक : प्रका. 20:11-15 से नाटक का पहला भाग प्रस्तुत करने के बाद कहे-प्रचारक ने अपने मित्रों को यह बताया...

प्रचारक : ''मैं प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पढ़ता रहा हूं। भविष्य में हम विशाल श्वेत सिंहासन पर विराजमान परमेश्वर को देखेंगे।

मित्र 1 : परमेश्वर प्रत्येक जन से प्रेम करता है क्या वह उन सबको स्वर्ग में प्रवेश करने देगा?

प्रचारक : वहां केवल वे ही प्रवेश कर सकेंगे जिनके नाम जीवन की पुस्तक में लिखे हुए पाए जाएंगे।

मित्र 2 : मैं यीशु को प्रेम करता हूं, परन्तु कभी-कभी बुरे काम भी कर लेता हूं। क्या मैं स्वर्ग में भी पाप कर सकूंगा?

प्रचारक : कदापि नहीं, परमेश्वर तुम्हें बदल देगा, हम जो कार्य करते हैं वह पुस्तक में लिख लेता है। हमारे बुरे कामों का न्याय होगा, परमेश्वर अच्छे कामों का प्रतिफल देगा।

मित्र 3 : जो लोग प्रभु यीशु का तिरस्कार करते हैं, उनका क्या होगा?

प्रचारक : जिनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं होंगे वे आग की झील में डाल दिए जाएंगे।

मित्र 3 : मैं चाहता हूं कि मेरा नाम यीशु अपनी पुस्तक में लिख ले।

उद्घोषक : नाटक का दूसरा भाग बताएं (प्रका. 21:1-4) तब कहें- सुनें कि प्रचारक अपने मित्रों से क्या कहता है-

प्रचारक : स्वर्ग अति सुन्दर स्थान है, जैसे एक सुन्दर प्रसन्न दुल्हन होती है।

मित्र 4 : संभव है परमेश्वर मुझे स्वर्ग में प्रवेश की अनुमति न दे, क्योंकि मेरा जीवन दु:खों से व बीमारियों से भरा है।

प्रचारक : परमेश्वर आपके हर दु:ख पीड़ा को दूर करेगा इस जीवन की सारी बुरी वस्तुएं यहीं छूट जाएंगी।

मित्र 4 : मैं वहां जाना चाहूंगा क्योंकि वहां पीड़ा न होगी।

उद्घोषक : नाटक का तीसरा भाग बताएं (प्रका. 21:22, 22:6) बताने के बाद

कहें-सुनें कि मित्र ने क्या कहा-

मित्र 5 : क्या स्वर्ग में परमेश्वर की आराधना का मन्दिर बहुत भव्य होगा?

प्रचारक : नहीं, वहां मन्दिर नहीं होगा, परमेश्वर स्वयं हमारे साथ होगा, वही हमारा मंदिर होगा, उसकी उपस्थिति से इतना भारी प्रकाश रहेगा कि वहां सूर्य व चन्द्रमा की भी आवश्यकता न होगी।

मित्र 5 : तब तो मैं सोचता हूं वहां वृक्ष व नदीयां भी न होंगी?

प्रचारक : ऐसी बात नहीं, वहां सुन्दर नदी होगी, जीवन का जल होगा और जीवन का वृक्ष भी होगा जो नगर के बीचो-बीच होगा।

सब मित्र : हम सब वहां जाना और यीशु के साथ रहना चाहते हैं! प्रभु यीशु के नाम की सर्वदा स्तुति हो।

उद्घोषक : जिन लोगों व बच्चों ने नाटक को सफल बनाया है सबका धन्यवाद।

प्रश्न : यदि यह नाटक युवाओं के लिए प्रस्तुत किया गया है तो उनसे भी वे प्रश्न पूछें जो इस पाठ में पहले दिए गए हैं। और किन बातों की वे स्वर्ग में आशा करते हैं-पूछें।

कविता : प्रकाशितवाक्य 19:6,7,8 पद तीन बच्चे पढ़कर सुनाएं।

बच्चे जीवन के वृक्ष की तस्वीर बनाएं। वह चित्र आराधना के समय युवाओं को दिखाएं और समझाएं कि स्वर्ग में इस वृक्ष के द्वारा परमेश्वर लोगों को चंगाई देगा।

बड़े बच्चे परमेश्वर के अंतिम न्याय के संबंध में कविता या गीता बनाएं।

बड़े बच्चे प्रकाशितवाक्य 21:3-4 पद **याद करें**, छोटे बच्चे पद 4 याद करें।

प्रार्थना : ''हे प्रभु यीशु, प्रेरित यूहन्ना को स्वर्ग का दर्शन दिखाने के लिए धन्यवाद। अब हमें भविष्य के विषय भयभीत रहने की आवश्यकता नहीं क्योंकि आपने पाप के शैतान पर जय पाई है, आपके साथ स्वर्ग में रहना बड़ा सुहावना होगा, हम आपको आमने-सामने देखेंगे और सदा आप साथ रह सकेंगे।''आमीन।

Copyright 2004 © by Paul-Timothy. May be freely copied. Download from www.Paul-Timothy.net